Toppersnotes
Unleash the topper in you

सामान्य हिन्दी

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	संधि	5
3	समास	20
4	उपसर्ग	26
5	प्रत्यय	35
6	संज्ञा	43
7	सर्वनाम	45
8	विशेषण	46
9	क्रिया	47
10	पर्यायवाची	54
11	काल	56
12	विलोम शब्द	58
13	वर्तनी शुद्धि	64
14	वाक्य के लिए एक शब्द	78
15	लिंग	84
16	कारक	88
17	शब्द युग्म	91
18	अलंकार	100
19	तत्सम – तद्भव शब्द	104
20	रस	106
21	छंद	109
22	मुहावरे	117
23	लोकोक्तियाँ	123

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ	126
25	हिंदी भाषा में पुरस्कार	129
26	अपठित गद्यांश	133

4
CHAPTER

उपसर्ग

उपसर्ग – उप + सर्ग से बना है । उप का अर्थ समीप व सर्ग का अर्थ रचना होता है।

परिभाषा – वे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व जुडकर अर्थ में परिवर्तन कर देते है और नये सार्थक शब्द की रचना कर देते है, उन्हे उपसर्ग कहते है।

- उपसर्ग किसी शब्द के पूर्व ही जुडते है। उपसर्ग शब्द नही होते बल्कि शब्दांश होते है – शब्द का टुकडा।
- उपसर्गो का स्वतंत्र अर्थ नही होता और जो उनका अर्थ होता है वह प्रभावित नही करता है।
- उपसर्गो का अर्थ किसी शब्द के पूर्व लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है।
- **उपसर्ग तीन तरह से अर्थ को प्रभावित करते है–**
  1. सकारात्मक अर्थ
  2. नकारात्मक अर्थ
  3. विलोमार्थ / विलोम जैसा

1. सकारात्मक

आचार्य – प्राचार्य
सिद्धि – प्रसिद्धि

2. नकारात्मक

हार – प्रहार
हार – संहार
मान – अपमान

उदाहरण –

आ + हार – आहार = भोजन
प्र + हार – प्रहार = आक्रमण
सम् + हार – संहार = मारना
उप + हार – उपहार = भेंट
वि + हार – विहार = घूमना
नि + हार – निहार = देखना
परि + धान – परिधान = वस्त्र
प्र + धान – प्रधान = मुख्य
उप + धान – उपधान = तकिया
अपि + धान – अपिधान = ढक्कन
अभि + धान – अभिधान = नाम
वि + धान – विधान = कानून

- उपसर्ग का स्वतंत्र रूप में प्रयोग नही होता है । इनका प्रयोग शब्दों के साथ ही होता है और शब्दो के साथ लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है जो निम्नानुसार है –

(उपसर्ग के भेद)

हिंदी भाषा में तीन प्रकार के उपसर्ग होते हैं –

उपसर्ग
↓ संस्कृत के उपसर्ग
↓ हिंदी के उपसर्ग
↓ विदेशी भाषा के उपसर्ग

उपसर्गों की संख्या (22)

प्र	→	प्रयोग	(प्र + योग)
परा	→	पराक्रम	(परा + क्रम)
अप	→	अपशब्द	(अप + शब्द)
सम्	→	संसार	(सम् + सार)
अनु	→	अनुशासन	(अनु + शासन)
अव	→	अवधारणा	(अव + धारणा)
निस्	→	निस्तेज	(निस् + तेज)
निर्	→	निराहार	(निर् + आहार)
दुस	→	दुस्साहस	(दुस् + साहस)
दुर्	→	दुरवस्था	(दुर् + अवस्था)
वि	→	विजय	(वि + जय)
आ	→	आजीवन	(आ + जीवन)
नि	→	निबन्ध	(नि + बन्ध)
प्रति	→	प्रत्याशा	(प्रति + आशा)
परि	→	पर्यावरण	(परि + आवरण)
उप	→	उपवन	(उप + वन)
अपि	→	अपिधान	(अपि + धान)
अति	→	अत्यधिक	(अति + अधिक)
सु	→	सुपुत्र	(सु + पुत्र)
उद् (उत्)	→	उद्भव	(उद् + भव)
अभि	→	अभिभाषण	(अभि + भाषण)
अधि	→	अधिकार	(अधि + कार)

1. प्र उपसर्ग – आगे / अधिक

प्रगति – प्र + गति
प्राचार्य – प्र + आचार्य (दीर्घ संधि)
प्रख्यात – प्र + ख्यात (संयोग)
प्रतीत – प्र + अतीत
प्रोन्नति – प्र + उन्नति (गुण संधि)
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रकार – प्र + कार
प्रचुर – प्र + चुर
प्रकृति – प्र + कृति
प्राकृतिक – प्र + कृति + इक
प्राध्यापक – प्र + अध्यापक

प्र उपसर्ग

प्रबल, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रमाण (प्र + मान), प्रणाम (प्र + नाम), प्रकोप, प्रार्थना (प्र + अर्थना), प्रकीर्ण, प्रबुद्ध, प्रयास, प्रादुर्भाव, प्रस्तावना, प्रहसन, प्रस्तुत, प्रमोद इत्यादि।

2. परा उपसर्ग – अधिक/पीछे

पराजय – परा + जय
पराभव – परा + भव
पराविधा – परा + विधा
पराक्रम – परा + क्रम
पराकाष्ठा – परा + काष्ठा
पराभव – परा + भव
परामर्श – परा + मर्श
परास्त – (परा + अस्त)
परावर्तन – (परा + वर्तन)
पाराषर – (परा + षर् + अ)

3. अप उपसर्ग – बुरा/हीन

अपमान – अप + मान (संयोग)
आपराधिक – अप + राध + इक
अब्ज – अप् + ज
अब्द – अप् + द
अपेक्षा – अप + ईक्षा (गुण सन्धि)
अपहरण – अप + हरण
अपभरण – अप + भरण
अपव्यय – अप + व्यय
अपकार – अप + कार
अपंग – अप + अंग
अपांग – अप + अंग
अपहरण, अपभ्रंश, अपकीर्ति, अपवर्तन

4. सम् उपसर्ग – समान–विशुद्ध

संस्कार – सम् + कार
संस्कृति – सम् + कृति
संविधान – सम् + वि + धान
सम्मान – सम् + मान
समाचार – सम् + आचार
संशय – सम् + शय
सांस्कृतिक – सम् + कृति + इक
संस्कृत, संवाद, संहार, संज्ञा (सम् + ज्ञा), समग्र (सम + अग्र), समागम, समायोजन, समारोह, समाविष्ट (सम् + आ + विष्ट), समूह (सम् + ऊह), समृद्ध (सम् + ऋद्ध), समुच्चय (सम् + उद् + चय), संदिग्ध, संदेहास्पद, संपर्क, संस्तुति, सन्नयास (सम् + नि् + आस), सन्निवेश (सम् + नि + वेश), सामूहिक (सम् + ऊह + इक), संयुक्त, संलग्न, संतोष।

5. अनु उपसर्ग – पीछे / विपरीत

अन्वय – अनु + अय
आनुवांशिक – अनु + वंश + इक
अनुदार – अनु + दार
अनूत्तर – अनु + उत्तर
अनुदान – अनु + दान
आनुपातिक – अनु + पात + इक
अनुसार – अनु + सार
अनूदित – अनु + उदित
आनुशंगिक – अनु + शंग + इक
अन्वेषण, अन्विति (अनु + इति), अनुच्छेद, अनुज, अनुशासन, अनुकरण, अनुजा, अनुयायी, अनुसार, अनुसंधान, अनुग्रह

6. अव उपसर्ग – बुरा / हीन

अवतार – अव + तार
अवधान – अव + धान
अवध – अव + ध
अवज्ञा – अव + ज्ञा
अवमानना – अव + मानना
अवहेलना – अव + हेलना
अवसर – अव + सर
अवधारणा, अवनति, अवशेष, अवगुण, अवस्था, अवलेह, अवतीर्ण, अवांतर (अव + अन्तर), अविच्छन (अव + छिन्न), आवयविक (अव + यव + इक), अवसाद, अवगाहन

7. निस् उपसर्ग – निषेध, बाहर

निष्चय – निस् + चय
निश्फल – निस् + फल
निष्छल – निस् + छल
निश्पाप – निस् + पाप
निष्चिन्तता – निस् + चिन्तता
निस्संकोच – निस् + संकोच
निष्शुल्क/निःशुल्क – निस् + शुल्क
निस्तेज, निष्श्वास (निस् + श्वास), निष्पक्ष

8. निर् उपसर्ग – निशेध, बाहर

निर्जन – निर् + जन (संयोग)
निर्धन – निर् + धन
नीरस – निर् + रस
नीरोग – निर् + रोग
निरन्तर – निर् + अन्तर
निरंजन – निर् + अंजन
निरादर – निर् + आदर
निराषा – निर् + आषा
नीरव – निः + रव
नीरन्ध्र – निः + रन्ध्र
नोट – नीरज (नीर+ज) में निर् उपसर्ग नहीं होता है।

निराहार, निरपराध, निरर्थक, निर्मल, निर्बल, निर्भीक, निर्वाचन, निर्विरोध, निरंकुश, निरन्तर, निरनुनासिक, निरवलंब, निराकार, निरीक्षक (निर् + ईक्षक), निरूत्साह (निर् + उत्साह)

9. दुस् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत

दुष्चिन्ता – दुस् + चिन्ता
दुष्चरित्र – दुस् + चरित्र
दुष्पाप – दुस् + पाप
दुष्फल – दुस् + फल
दुश्मन – दुस् + मन
दुष्परिणाम – दुस् + परिणाम
दुष्शासन – दुस् + शासन
दुष्प्रभाव – दुस् + प्रभाव
दुस्साहस, दुष्कर्म, दुष्प्रयोग, दुष्चरित्र

10. दुर् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत

दुर्गम – दुर् + गम
दुर्ग – दुर् + ग
दुर्जन – दुर् + जन
दुर्दशा – दुर् + दशा
दुर् + अव + स्थ + आ, दुरावस्था नहीं होती है। (दुरवस्था)
दुराशा – दुर् + आशा
दूरम्य – दुर् + रम्य
दौर्बल्य (दुर् + बल + य)
दुरूप्रयोग, दुराशा, दुर्धटना, दुर्गति, दुर्बल, दुर्गंध, दुर्बुद्धि, दुर्व्यवहार (दुर् + वि + अव + हार), दूरम्य (दुर् + रम्य), दौर्जन्य (दुर् + जन + य), दुर्गुण, दुर्जन

11. वि उपसर्ग – विषेश या भिन्न

व्यास – वि + आस
व्याकरण – वि + आ + करण
व्याकुल – वि + आकुल
व्यावहारिक – वि + अव + हार + इक
वैधव्य – वि + धवा + य
विवाह – वि + वाह
वैवाहिक – वि + वाह + इक
विजय – वि + जय
व्यूह – वि + ऊह
व्यायाम – वि + आयाम
वीक्षक – वि + ईक्षक
वीप्सा – वि + ईप्सा
व्यय (वि + अय), व्याधि, व्यायाम, व्याख्या, विशेष, विकास, विघटन, वितृष्णा, विन्यास, विपर्यय (वि + परि + अय) विप्रलंभ, विवेक, व्यंजन (वि – अंजन), व्यतिरेक, व्यवसाय (वि + अव + साय), व्यस्त, विच्छेद वैशेषिक, वैकल्पिक।

12. आ उपसर्ग – तक/से

आजन्म – आ + जन्म
आमरण – आ + मरण
आम – आ + म
आजानुबाहु – आ + जानुबाहु
आकाश – आ + काश
आकण्ठ – आ + कण्ठ
आजीवन, आरक्षण, आहार, आकर्षण, आकांक्षा, आक्रमण, आग्रह, आदान, आनंद, आभूषण, आयात, आराधना, आशंका, आश्रय, आसन्न, आदेश, आजना, आभार, आगमन

13. नि उपसर्ग – नीचे, कमी

निषंग – नि + संग
न्यास – नि + आस
न्याय – नि + आय
न्यस्त – नि + अस्त
निवास – नि + वास
निषेध – नि + सेध
निष्ठा – नि + ष्ठा
न्यून, – नि + ऊन
नैदानिक – नि + दान + इक
निडर, निबंध, निदाघ, निदेशक, नियंत्रण, नियुक्ति, निरत, निलंबन, निहित, न्यसत

14. अधि उपसर्ग – श्रेष्ठ/ऊपर

अधित्यका – अधि + त्यका
अध्यक्ष – अधि + अक्ष
अध्याय – अधि + आय
अधीन – अधि + इन
अधीत – अधि + इत
अधिकार – अधि + कार
अध्यादेश – अधि + आदेश
अधीक्षक – अधि + ईक्षक
आध्यात्मिक – अधि + आत्मिक
अध्यात्म, अधिकरण, अधिनियम, अधिशासी, अधिसूचना, अधीक्षण, अध्ययन, अधिष्ठाता, अधिशेष

15. अपि उपसर्ग – भी, परे

अपितु – अपि + तु
अप्यलम – अपि + अलम (थोडा)
अपिहित – अपि + हित
अपिधान – अपि + धान

16. अति उपसर्ग – अधिक

अत्यन्त – अति + अन्त
अत्याचार – अति + आचार
अतीत – अति + इत
अत्यधिक – अति + अधिक
अत्यल्प – अति + अल्प

Unleash the topper in you

अत्युक्ति, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अतिव्याप्त, अतिशय, अतींद्रिय, अतीव, अत्याधुनिक, आत्यंतिक (अति + अन्त + इक), अतिप्रिय, अतिसार।

17. सु उपसर्ग – सरल/सुन्दर

स्वच्छ – सु + अच्छ
स्वल्प – सु + अल्प
स्वागत – सु + आगत
सूक्ति – सु + उक्ति
सौजन्य – सुजन + य

सुपुत्र, सुगंध, सुशील, सुचरित्र, सुदूर, सुपाच्य, सुरति, सुलभ, सुविधा, सुव्यवस्थित, सुहृद, स्वयं (सु + अयं) सुषमा, सुषुप्त, सौभाग्य (सु + भाग + य) सौमित्र (सु + मित्र + अ), सुयोग, सुलथ, सुगम

18. उद्, उत् उपसर्ग – श्रेष्ठ / ऊपर

उच्चारण – उत् + चारण
उच्छवास – उत् + श्वास
उदार – मूल शब्द है।
उच्छृंखला (उत् + श्रृंखला)
उन्नति – उद् + नति
उत्तीर्ण – उद् + तीर्ण

उल्लेख, उद्धार, उच्छासन, उज्ज्वल, उद्घाटन, उद्देश्य (उद् + देश्य), उद्धत (उद् + हत), उद्भव, उदार, उत्सर्ग, उत्साह, उत्तम।

नोट– संस्कृत व्याकरण ग्रंथो मे उद् उपसर्ग ही है जबकि हिन्दी में उत् उपसर्ग का भी प्रयोग होता है।

19. अभि उपसर्ग – सामने / पास

अभ्यास – अभि + आस
अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
अभ्यागत – अभि + आगत
अभीष्ट – अभि + इष्ट
अभीप्सा – अभि + ईप्सा
अभ्यागत – अभि + आगत

अभ्यूदय (अभि + उदय), अभिमान, अभिज्ञान, अभिभाषण, अभिथा, अभिन्यास, अभियंता, अभिराम, अभिलाषा, अभिशंसा, अभिशाप, अभिवादन, अभियान, अभिषेक (अभि + सेक)

20. प्रति उपसर्ग – प्रत्येक/सामने

प्रत्युशा – प्रति + उशा
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रतिदिन – प्रति + दिन
प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण
प्रतिज्ञा – प्रति + ज्ञा
प्रतिष्ठा – प्रति + स्था
प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा

प्रत्याशा (प्रति + आशा), प्रत्यक्ष, प्रतिकूल, प्रतिध्वपि, प्रतिक्रिया, प्रतिक्षण, प्रतिनियुक्ति, प्रतिनिधि, प्रतिस्पर्धा, प्रतिहिंसा, प्रतिवर्ष

21. परि उपसर्ग – चारो ओर/पास

पर्यावरण – परि + आवरण
परीक्षा – परि + ईक्षा
परितः – उपसर्ग नही मूल शब्द
पर्याप्त – परि + आप्त
पर्यंक – परि + अंक
पारिवारिक – परिवार + इक

पर्यटन (परि + अटन), परिक्रमा, परिपूर्ण, परिमाण (परि + मान), परिणाम (परि + नाम) परिधान, परिधि, परिमार्जन, परिवार, परिवेश, परिश्रम, पारिभाषिक (परि + भाष + इक), पारिवारिक, परिष्कार (परि + कार) पर्यूषण (परि + उषण), पर्यवेक्षण, पर्याप्त (परि + आप्त), परीक्षा (परि + ईक्षा), परिवर्तन

22. उप उपसर्ग – समीप/नीचे

उपत्यका – उप + अति + अका
उपकार – उप + कार
उपदेश – उप + देश
उपेक्षा – उप + ईक्षा
उपाध्यक्ष – उप + अधि + अक्ष
उपमंत्री – उप + मंत्री
उपाचार्य – उप + आचार्य
औपचारिक – उपचार + इक
औपनिवेशक– उप + निवेश + इक

उपसर्ग, उपवन, उपहार, उपनिवेश, उपन्यास, उपमा (उप + मा), उपमान, उपलब्धि, उपस्थिति, उपांग (उप + अंग), उपाधि, उपाध्याय, उपार्जन, उपालंभ (उप + आ + लंभ), उपवास।

संस्कृत के अन्य उपसर्गों का विवरण

1. तद् (तत्) – तद्भव, तत्सम, तल्लीन, तन्मय, तन्मात्रा, तत्पर, तदुपरान्त।
2. सम् – सत्कार, सत्संग, सद्भावना, सदाचार, सदुपदो, सच्चरित्र, सच्चिदानंद, सन्मार्ग, सज्जन, सन्मति
3. स्व –स्वदो, स्वजन, स्वतंत्र, स्वार्थ, स्वायी, स्वाधीन, स्वाध्याय, स्वावलम्बन, स्वाभिमान, स्वभाव।
4. प्र – परदो, परतंत्र, परहित, परोपकार, पराधीन, पराश्रित
5. 5.अ – अशुभ, अहित, अन्याय, अनाथ, अविवेक, अनश्वर
6. अन् –अनुपयोगी, अनुपजाऊ, अनुर्वर (अन् + उर्वर), अनीश्वर, अनृम, अनान, अनंग, अनादि।
7. इति –इतिहास, इजिश्री, इत्यादि
8. स –सपरिवार, सशर्त, ससम्मान, समान, सहित

9. न – नास्तिक, नगण्य, नग, नहंसक

10. सह – सहचर, सहकर्मी, सहपाठी, सहयात्री, सहयोग, सहोदर

11. आत्म –आत्मज्ञान, आत्मरक्षा, आत्मबलिदान, आत्महत्या, आत्मावलोकन

12. अधस् – अधोमति, अधोगामी,

(अधः) अधोलिखित, अधोवस्त्र, अधो हस्ताक्षर, अधःपतन

13. अन्तर – अन्तर्गत, अन्तर्देशीय,

(अन्तः)अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तरात्मा, अन्तः साक्ष्य, अन्तश्चेतना, अन्तर्हित

14. अन्तर – अन्तरराष्ट्रीय

15. प्रातर – प्रातःकाल, स्मरणीय, (प्रातः) प्रातः प्रातः वन्दवनीय

16. पुरस् – पुरस्कार, पुरस्कृत, (पुरः) पुरस्कर्ता, पुरोहित, पुरोगामी

17. पुनर – पुनर्जन्म, पुनर्गणना, (पुनः) पुनरावृत्ति, पुनरवलोकन

18. तिरस् – तिरस्कार, तिरोभाव, (तिरः) तिरोहित, तिरस्कृत तिरस्कर्ता

19. आविस् – आविष्कार, आविष्कृत, (आविः) आविष्कर्ता

20. आविर् –आविर्भाव, आविर्भूत (आविः)

21. प्रादुर – प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत (प्रादूः)

22. प्राक् – प्राक्कलन, प्राक्कथन, प्राङ्. मुख, प्रागैतिहासिक (प्राक् + इतिहास + इक)

(2) हिन्दी के उपसर्ग

हिन्दी भाषा में संस्कृत के उपसर्गो में परिवर्तन करके (तद्भव) उपसर्गो का निर्माण किया गया है।

क्र. सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	अभाव / नही	अभाव, अखण्ड, अज्ञान, अजर, अमर, अकाज, अचेत, अटल, अछूता, अटल, अथाह, अपच, अलग।
2.	उ	ऊँचा	उतारना, उछालना, उखाड़ना, उजड़ना, उतावला, उचक्का, उतारना।
3.	औ	बुरा / नीचे	औघट, औगुण, औसर, औतार, औघड़
4.	अन	बिना	अनदेखा, अनमोल, अनपढ़, अनमेल, अनहोनी
5	अध	आधा	अधखिला, अधपका, अधमरा, अधजला
6.	अधः	नीचे	अधोमुख, अधोगति, अधोगत
7.	उन	एक कम	उनसठ, उनचास, उन्नासी, अनतालिस, उनहतर, उन्नीस।
8.	क / कु	बुरा / कठिन	कपूत, कुढंग, कुचाल, कुपुत्र, कुठौर, कुटेव, कुख्यात, कुरीति, कुकर्म, कुमार्ग
9.	नि	विपरीत	निडर, निशान, निपट, निठल्ला, निधड़क, निपट, निहत्था, निपूता, निकम्मा।
10.	स / सु	अच्छा	सपूत, सजल, सजीव, सुयश, सुकान्त, सबेरा, सहेली, सुजान, सुडौल, सुघड़, सचेत, सजग।
11.	भर	पुरा / भरा हुआ	भरपूर, भरमार, भरसक, भरपाई, भरपेट, भरकम।
12.	चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौखट, चौरंगी, चौपहिया, चौपाया, चौपाल, चौपाई, चौबारा, चौपड़, चौमुखा।
13.	दु	दो	दुनाली, दुरंगा, दुमुँह, दुगुना, दुपट्टा, दुपहिया, दुबारा, दुपहर, दुधारी, दुभाँत, दुभाषिया, दुमट, दुलत्ती।
14.	ति	तीन	तिरंगा, तिपाही, तिमाही, तिराहा, तिकोना, तिबारा
15.	पंच	पाँच	पंचमेल, पंचकूटा, पंचमणी, पंचरंगी।
16.	पर	दूसरा	परहित, परसुख, परकाज, परदादा, परपोता।
17.	चिर्	देर तक	चिरकाल, चिरायु, चिरस्थायी, चिरपरिचित, चिराग, चिरंजीवी।
18.	बिन	अभाव / निषेध	बिनदेखा, बिनखाया, बिनब्याहा, बिन जाने, बिनबोया, बिनसोचा, बिनमाने, बिनबुलाया, बिनजाया।

19.	नाना	अनेक	नानाविध, नानाप्रकार, नानाभाँति
20.	बहु	ज्यादा/अधिक	बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन
21.	स्व	अपना	स्वदेश, स्वराज, स्वभाव
22.	सह	साथ	सहचर, सहपोठी, सहयोग
23.	सम	समान	समतल, समकक्ष, समकालीन, समकोण

(3) विदेशी भाषा के उपसर्ग

भारत में बहुत समय तक उर्दू व अन्य विदेशी भाषाएँ प्रचलित रही हैं। अतः हिन्दी भाषा में उर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के उपसर्ग भी प्रयुक्त होने लगे हैं।

क्र. सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अल	निश्चित	अलविदा, अलबेला, अलमस्त, अलहदा, अलबत्ता, अलकायदा।
2.	ना	रहित	नालायक, नापसंद, नापाक, नाइंसाफी, नाखुश, नाकाम, नामुमकिन, नादान, नाबालिग, नामुराद, नाराज, नाउम्मीद, नाजायज।
3.	ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौको, ऐनआदमी, ऐनइनायत।
4.	ला	बिना	लाचार, लाजबाव, लापता, लाइलाज, लाजिम, लापरवाह, लावारिस।
5.	बद	बुरा/रहित	बदनाम, बदजात, बदतमीज, बदकिस्मत, बदनसीब, बदचलन, बदमिजाज, बदसूरत, बदहवास, बदहजमी, बदहाल।
6.	बा	अनुसार/साथ	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत, बामुलाहजा।
7.	गैर	रहित/भिन्न	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क, गैर, कौम, गैरजिम्मेदार, गैर–मुमकिन, गैर–सरकारी।
8.	खुश	अच्छा	खुशमिजाज, खुश–किस्मत, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू, खुशदिल, खुशनुमा, खुशनसीब।
9.	कम	थोड़ा	कमजोर, कमसिन, कमअक्ल, कमउम्र, कमबख्त,
10.	हम	साथ	हमदम, हमसफर, हमराह, हमजोली, हमवतन, हमउम्र, हमराज, हमदर्द।
11.	बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर, बिलाकानून, बिलाशर्त ।
12.	बे	अथवा	बेचारा, बेहद, बेचैन, बेअक्ल, बेईमान, बेइज्जत, बेखौफ, बेजान, बेदर्द, बेधड़क, बेनजरी, बेरहम, बेबुनियाद, बेवकूफ, बेवफा, बेवक्त, बेशक, बेसमझ, बेहद, बेहिसाब, बेकार, बेगम, बेघर, बेसहारा, बेदखल।
13.	दर	में	दरअसल, दरकार, दरवेश।
14.	हर	प्रत्येक	हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज, हरएक, हरजाई, हरकोई, हरतरफ, हरदम, हरबार, हरवक्त, हररोज, हरपल, हरसाल।
15.	ब	साथ/पर	बदस्तुर, बतौर, बशर्त, बजाय, बखूबी, बदौलत, बशर्ते।
16.	सर	मुख्य/प्रधान	सरकार, सरताज, सरदार, सरनाम, सरपंच।
17.	नेक	भला	नेकदिल, नेकनियत, नेकनाम।
18.	हैड	प्रमुख	हैडमास्टर, हैडबॉय, हैडगर्ल।
19.	सब	उप	सब इंस्पेक्टर, सबडिवीजन, सबकमेटी।
20.	बर	उपर/बाहर	बरकरार, बरबाद, बरदाश्त, बरखास्त।
21.	टेली	(दूर)	टेलीविजन, टेलीफोन।
22.	हाफ	आधा	हाफपेंट, हाफ टिकिट, हाफशर्ट।
23.	जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सैक्रेटरी।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण शब्द (हर टॉपर चयनित की पसंद)

	शब्द	उपसर्ग	कुल उपसर्ग
1.	दुर्व्यवहार	दुर् + वि + अव + हार → 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
2.	अस्वभाविक	अ + स्व + भाव + इक → 1 सु + अ 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
3.	पर्यावरण	परि + आवरण → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग

4.	अव्यवस्था	अ + वि + अव + स्था → 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
5.	अप्रत्याशित	अ + प्रति + आशा + इत → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
6.	अतिव्याप्ति	अति + वि + आप्ति → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
7.	अत्यावश्यक	अति + आ + वश्यक → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
8.	अधिनियम	अधि + नि + यम → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
9.	अभिन्यास	अभि + नि + आस → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
10.	अभ्यागत	अभि + आ + गत → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
11.	प्रत्यपकार	प्रति + अप + कार → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
12.	प्रति नियुक्ति	प्रति + नि + उक्ति → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
13.	प्रत्यावर्तन	प्रति + आ + वर्तन → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
14.	प्रत्युत्तर	प्रति + उद् + तर → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
15.	पर्यवेक्षण	परि + अव + ईक्षण → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
16.	व्यतिरेक	वि + अति + रेक → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
17.	व्यवसाय	वि + अव + साय → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
18.	व्याकरण	वि + आ + करण → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
19.	व्याकुल	वि + आ + कुल 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
20.	वैयाकरण	वि + आ + करण + अ	दो उपसर्गो का प्रयोग
21.	आन्विक्षिकी	अनु + ईक्षा + इक + ई 1	एक उपसर्ग का प्रयोग
22.	सुव्यवस्थित	सु + वि + अव + स्थित 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
23.	सुविख्यात	सु + वि + ख्यात 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
24.	स्वागत	सु + आ + गत 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
25.	अपव्यय	अप + वि + अय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
26.	आपराधिक	अप + राध + इक 1	एक उपसर्ग का प्रयोग
27.	आवयविक	अव + यव + इक 1	एक उपसर्ग का प्रयोग

28.	उपन्यास	उप + नि + आस 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
29.	उपाध्यक्ष	उप + अधि + अक्ष 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
30.	उपाध्याय	उप + अधि + आय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
31.	औपनिवेशक	उप + नि + वेश + इक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
32.	प्राध्यापक	प्र + अधि + आ + पक 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
33.	प्राकृतिक	प्र + कृति + इक 1	एक उपसर्ग का प्रयोग
34.	दुर्व्यवहार	दुर + वि + अव + हार 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
35.	निरनुनासिक	निर् + अनु + नासिक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
36.	निरपराध	निर् + अप + राध 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
37.	निराश्रय	निर् + आ + श्रय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
38.	निरीक्षक	निर् + ईक्षक 1	एक उपसर्ग का प्रयोग
39.	निरूत्साहित	निर् + उद् + साहित 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
40.	निरूपाय	निर् + उप + आय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
41.	दुष्प्रयोग	दुस् + प्र + योग 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
42.	उदाहरण	उद् + आ + हरण 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
43.	औद्योगिक	उद् + योग + इक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
44.	समन्वय	सम् + अनु + अय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
45.	सामुदायिक	सम् + उद् + आय + इक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
46.	सांविधानिक	सम् + वि + धान + इक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
47.	सन्न्यास	सम् + नि + आस 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
48.	अप्रत्याशित	अ + प्रति + आशित 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
49.	अनन्वय	अन् + अनु + अय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
50.	अनुत्पादक	अन् + उद् + पादक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
51.	अनधिकार	अन् + अधि + कार 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग

Toppers Notes
Unleash the topper in you

52.	पुनरवलोकन	पुनर् + अव + लोकन 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
53.	सदाचार	सत् + आ + चार 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
54.	सोदाहरण	स + उद् + हरण 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
55.	स्वाधीन	स्व + अधि + इन 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
56.	सोल्लास	स + उद् + लास 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग

उपसर्ग और प्रत्यय मे समानता

उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दों के अंश होते है, पूर्ण शब्द नही। इनका अकेले प्रयोग नही किया जाता। दोनों के प्रयोग से ही अर्थ में अन्तर आता है। एक शब्द में इन दोनों को साथ भी जोड़ा जा सकता है।

जैसे–

उपसर्ग	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**	**नया शब्द**
अभि	मान	ई	अभिमानी
अ	ज्ञान	ई	अज्ञानी
स्व	तंत्र	ता	स्वतंत्रता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5
CHAPTER

प्रत्यय

परिभाषा

जो शब्दांश किसी मूल धातु (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया/धातु) के बाद लगकर शब्द का निर्माण करते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं।

भाषा में प्रत्यय का महत्व इसलिए भी है क्योंकि उसके प्रयोग से मूल शब्द के अनेक अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है। यौगिक शब्द बनाने में प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है।

जैसे–

खिलाड़ी	–	खेल	+	आड़ी
पढ़ाकू	–	पढ़	+	आकू
झूला	–	झूल	+	आ
मिलावट	–	मेल	+	आवट
ननिहाल	–	नानी	+	हाल
खटोला	–	खाट	+	ओला
सपेरा	–	साँप	+	एरा
मिठास	–	मिठ	+	आस

हिन्दी में प्रत्यय तीन प्रकार के होते है।

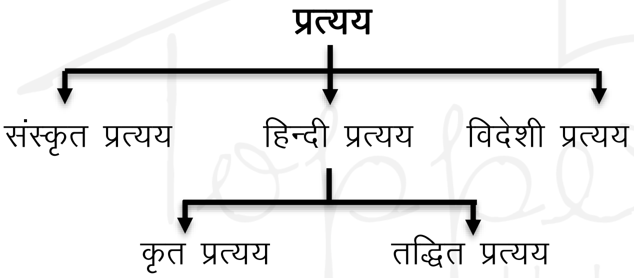

संस्कृत के प्रत्यय

क्र. संख्या	प्रत्यय	उदाहरण
1.	इत	हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
2.	इक	मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक
3.	इय	भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय
4.	एय	आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
5.	तम	अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम
6.	वान	धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान
7.	मान	श्रीमान, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
8.	त्व	गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व
9.	शाली	गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली, वैभवशाली
10.	तर	श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघूत्तर

हिन्दी के प्रत्यय

1. कृत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में जुड़कर नए शब्दों की रचना करते है, उन्हें कृत प्रत्यय कहते है। कृत प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय

क्र. संख्या	प्रत्यय	उदाहरण
1.	आ	मेला, खेला, झूला, भूला
2.	ई	हँसी, सुनी, सोची, बोली
3.	न	नंदन, चंदन, बेलन, बंधन
4.	अन	सोहन, रटन, पठन
5.	आहट	घबराहट, बड़बड़ाहट, चिल्लाहट

विषेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय

क्र. संख्या	प्रत्यय	उदाहरण
1.	ऊ	चालू, झाड़ू, खाऊ, बाजारू
2.	आऊ	दिखाऊ, टिकाऊ, बिकाऊ
3.	आड़ी	कबाड़ी, खिलाड़ी
4.	एरा	कसेरा, लुटेरा, बसेरा

कृत प्रत्यय के भेद

कृत प्रत्यय पाँच प्रकार का होता है।

- कर्तृवाचक
- कर्मवाचक
- करणवाचक
- भाववाचक
- क्रियावाचक

कर्तृवाचक कृत प्रत्यय

कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कर्तृ वाचक कर्तृ प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे– ईश्वर सबका पालनहार है।
पालनहार –'पालन' धातु + हार प्रत्यय + कर्ता कारक

हार – पालनहार (पालन + हार), राखनहार, चाखनहार, मरणहार, होनहार, लेनहार, देनदार।

वाला – लिखने वाला (लिखनें + वाला), पढ़ने वाला, रखवाला, बोलने वाला, हँसने वाला, रोने वाला, दिखने वाला, खेलने वाला, दौड़ने वाला

क – रक्षक (रक्ष + क), भक्षक, शोषक, पोषक

अक – लेखक (लिख् + अक), गायक, पाठक, नायक, साधक, ऊठक, वाचक, बैठक, पावक, कारक (कृ + अक), धारक, जातक, कसक, शायक।

ता – दाता (दा + ता), सुंदरता, वक्ता, श्रोता, ज्ञाता, त्राता

अक्कड़ – घुमक्कड़ (घूम + अक्कड़), भुलक्कड़, पियक्कड़, बुझक्कड़, कुदक्कड़

एरा – लुटेरा (लूट + एरा), बसेरा, कसेरा, घसेरा

कर्मवाचक कृत प्रत्यय

कर्म का बोध कराने वाले कृत प्रत्यय कर्म वाचक कृत प्रत्यय कहलाते है। जैसे–अतुल ने **खिलौना** तोड़ दिया।

खिलौना – 'खेल' धातु + औना प्रत्यय, कर्म कारक

औना – खिलौना (खेल + औना), बिछौना

नी – ओढ़नी, मथनी, छलनी, लेखनी, धौकनी, करनी, कहानी।

ना – पढ़ना, लिखना, गाना, खाना, नहाना, रोना, सोना, दाना, झरना, पालना, पाहुँचना।

करणवाचक कृत प्रत्यय

साधन का बोध कराने वाले कृत प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते ह।

अन – बेलन (बेल + अन), चलन, जलन, ढक्कन, चुभन, बंधन, मंथन, मरण (मृ + अन), लगन, घुटन।

ऊ – झाड़ू (झाड़ + ऊ), बिगाड़ू, चालू, फेंकू, खाऊ।

नी – चटनी, कतरनी, सूँघनी

ई – खाँसी, धाँसी, फाँसी, जननी, चोरी, घुड़की, झपकी, भभकी, बोली, हँसी।

भाववाचक कृत प्रत्यय

क्रिया के भाव का बोध कराने वाला प्रत्यय भाववाचक कृत प्रत्यय कहलाता है।

आप – मिलाप, विलाप

भावट – सजावट, मिलावट, लिखावट, दिखावट, थकावट, रूकावट, तरावट, फलावट (फल + आवट)

आव – बनाव, खिंचाव, तनाव, लगाव, भराव, बहाव, दबाव, झुकाव, चुनाव, छिड़काव।

आई – लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई, पढ़ाई, लड़ाई, पिटाई, कलाई, कटाई, चराई, विदाई, सिंचाई।

क्रियावाचक कृत प्रत्यय

क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले कृत प्रत्यय क्रियावाचक कृत प्रत्यय कहलाते है।

जैसे

या – आया, बोया, खाया, पीया, गया।

कर – गाकर, देखकर, सुनकर, आकर, जाकर, पढ़कर, लिखकर

आ – सूखा, भूला, गुजारा, घाटा, खटका, कठफोड़ा, चढ़ा, जोड़, ठेला, मेला।

ता – खाता, पीता, लिखता, पढ़ता, रोता, सोता।

तद्धित प्रत्यय

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे

मानव	+	ता	=	मानवता
जादू	+	गर	=	जादूगर
बाल	+	पन	=	बालपन
लिख	+	आई	=	लिखाई

तद्धित प्रत्यय के भेद

तद्धित प्रत्यय के सात उपभेद होते है। (हिन्दी व्याकरण एवं रचना प्रबोध मा.शि. बोर्ड, राजस्थान, अजमेर)

- कर्तृवाचक प्रत्यय
- भाववाचक प्रत्यय
- संबंधवाचक प्रत्यय
- गुणवाचक प्रत्यय

Unleash the topper in you

- स्थानवाचक प्रत्यय
- ऊनतावाचक प्रत्यय
- स्त्रीवाचक प्रत्यय

कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय

कर्ता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

ध्यान देने योग्य तथ्य

जैसे – **सुनार** आभूषण बनाता है।
सुनार – सोना 'शब्द'+ 'आर' प्रत्यय, कर्ता कारक

विशेष तथ्य

किसी भी शब्द में सही प्रत्यय की पहचान करने हेतु सबसे पहले मूल शब्द को अलग कर लेना चाहिए तथा शेष बचने वाले अंश को प्रत्यय मान लेना चाहिए।

जैसे – ऊपर लिखे 'सुनार' शब्द से हमने समझा कि **सोने** के आभूषण बनाने वाले व्यक्ति को 'सुनार' कहा जाता है तो यहाँ 'सोना' मूल शब्द है व 'आर' प्रत्यय के जुड़ने से सुनार शब्द की रचना हुई है।

आर – सुनार (सोना), लुहार (लोहा), कुम्हार (कुंभ + आर), गँवार (गाँव), कहार (कह), चमार (चाम), सुथार (सूथ (लकड़ी)।

ई – माली (माला), तेली (तेल), ऊनी (ऊन), सर्दी, हिंदी, सुखी, सफेदी।

वाला – गाड़ीवाला, टोपी वाला, इमली वाला, घर वाला, दूध वाला, फल वाला, मिठाई वाला, सब्जी वाला।

हारा – लकड़हारा (लकड़ी), पनिहारा (पानी), मनिहारा (मणि)।

ची – अफीमची, नकलची, खजानची, तोपची, बावरची, बगीची (बाग), तलबची, देगची।

भाववाचक तद्धित प्रत्यय

भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।
अर्थात्–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अन्त में जुड़कर कर्तावाचक शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्ययक कहलाते हैं।

जैसे

ता – सुंदरता, मानवता, दुर्बलता, आवश्यकता, मधुरता, महत्ता, लघुता, मित्रता (मित्र), दासता।

आहट – कड़वाहट, घबराहट, गुर्राहट, बिलबिलाहट, चिकनाहट, मर्माहट, मुस्कुराहट।

आपा – मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा, रँडापा।

ई – गर्मी, सर्दी, गरीबी।

आई – पढ़ाई, लिखाई, लड़ाई, चढ़ाई, अच्छाई, चौड़ाई, ऊँचाई, बड़ाई, बुराई, चतुराई।

आवा – बुलावा, दिखावा, भुलावा, चढ़ावा

संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय

संबंध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

इक प्रत्यय

नियम 1

यदि मूल शब्द के प्रथम वर्ण में कोई भी मात्रा नही है तो पहले उसमें 'आ' की मात्रा लगाते हैं अर्थात् 'अ' को 'आ' में परिवर्तित करते हैं फिर 'इक' प्रत्यय जोड़ते है।

धार्मिक	–	**धर्म**	**+**	**इक**
वार्षिक	–	वर्ष	+	इक
प्राथमिक	–	प्रथम	+	इक
माध्यमिक	–	माध्यम	+	इक
सामाजिक	–	समाज	+	इक
सामासिक	–	समास	+	इक
सार्वनामिक	–	सर्वनाम	+	इक
मासिक	–	मास	+	इक
शाब्दिक	–	शब्द	+	इक
आक्षरिक	–	अक्षर	+	इक
साप्ताहिक	–	सप्ताह	+	इक
लाक्षणिक	–	लक्षण	+	इक
स्वाभाविक	–	स्वभाव	+	इक
शारीरिक	–	शरीर	+	इक

अपवाद

धनिक	धन	+	इक
पथिक	पथ	+	इक
रसिक	रस	+	इक
तनिक	तन	+	इक
क्षणिक	क्षण	+	इक
श्रमिक	श्रम	+	इक

Unleash the topper in you

नियम 2

यदि मूल शब्द के प्रथम वर्ण में इ/ए की मात्रा/ई की मात्रा है तो पहले इसे 'ऐ' की मात्रा में परिवर्तित करते हैं फिर इक प्रत्यय जोड़ते है।

वैज्ञानिक	–	विज्ञान	+	इक
जैविक	–	जीव	+	इक
वैचारिक	–	विचार	+	इक
सैद्धांतिक	–	सिद्धांत	+	इक
वैवाहिक	–	विवाह	+	इक
नैतिक	–	नीति	+	इक
ऐतिहासिक	–	इतिहास	+	इक
दैविक	–	देव	+	इक
ऐच्छिक	–	इच्छा	+	इक
वैदिक	–	वेद	+	इक
ऐन्द्रजालिक	–	इन्द्रजाल	+	इक
दैहिक	–	देह	+	इक
दैनिक	–	दिन	+	इक
सैनिक	–	सेना	+	इक

अपवाद

वैयक्तिक् – व्यक्ति + इक

नियम 3

यदि मूल शब्द के प्रथम वर्ण में उ/ऊ/ओ की मात्रा है तो पहले इसे औ की मात्रा में परिवर्तन करते है फिर इक प्रत्यय जोड़ते है।

भौगोलिक	–	भूगोल	+	इक
मौखिक	–	मूख	+	इक
भौतिक	–	भूत	+	इक
मौलिक	–	मूल	+	इक
औद्योगिक	–	उद्योग	+	इक
बौद्धिक	–	बुद्धि	+	इक
औपचारिक	–	उपचार	+	इक
यौगिक	–	योग	+	इक
औपनिषदिक	–	उपनिषद्	+	इक
लौकिक	–	लोक	+	इक
पौराणिक	–	पुराण	+	इक

आलु – कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु, दयालु

ईला – रंगीला, चमकीला, भड़कीला, खर्चीला, जहरीला, रंगीला, हठीला, गर्वीला, लजीला (लाज)

एरा – चचेरा, ममेरा, फुफेरा

तर – कठिनतर, समानतर, उच्चतर, निम्नतर, दृढ़तर, बृहत्तर

अयन – रामायण (राम + अयन), नारायण (नार + अयन)

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय

गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

वान – गुणवान, धनवान, बलवान, दयावान, रूपवान, भाग्यवान, भगवान (भज)।

मान – शक्तिमान, बुद्धिमान, शोभायमान, मूर्तिमान।

ईय – भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय, मानवीय, शारदीय, स्थानीय, भवदीय (भवत् + ईय)

ई – क्रोधी, रोगी, भोगी, खुशी, जवानी, ज्ञानी।

स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय

स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

वाला – शहरवाला, गाँववाला, कस्बे वाला

इया – उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया

ई – राजस्थानी, रूसी, चीनी

ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय

लघुता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

पहचान – किसी तद्धित प्रत्यय के जुड़ जाने पर यदि मूल शब्द बड़े आकार से छोटे आकार को प्रकट करने लगता है, तो वहाँ वह ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय माना जाता है।

नोट – यहाँ 'नर्तकी' शब्द अपवादित है जो (नर्तक + ई) से मिलकर बनता है।

इया – लुटिया (लोटा), लठिया (लाठी), खटिया (खाट), बिटिया (बेटी), चुटिया (चोटी), घटिया, डिब्बिया, बटिया

ई – प्याली, नाली, बाली, मण्डली, टोकरी, हथौड़ी, पहाड़ी, झण्डी, चिमटी

ड़ी – पंखुड़ी, आँतड़ी, पगड़ी, तगड़ी, चौकड़ी, चमड़ी, रबड़ी।

ओला – खटोला, संपोला, फफोला, बतोला।

उआ – ललुआ (लालू), कलुआ (कालू), गेरूआ, बबुआ, मनुआ (मनु), कछुआ (कच्छप)

इका – पत्रिका (पत्र), लतिका

स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय

स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

आ – सुता, ऊजा, अनुजा, छात्रा, शिष्या

ई – देवी, बेटी, काकी, नानी, दादी, मामी, मैसी, साली।

आनी – सेठानी, नौकरानी, देवरानी, जेठानी, इंद्राणी, पंडितानी, मेहतरानी, मर्दानी।

इनी – कमलिनी, नंदिनी, सरोजिनी, वाहिनी, भुजंगिनी, प्रणयिनी, यक्षिणी।

नी – मोरनी, शेरनी, चाँदनी, नटनी, नथनी, पत्नी, पैजनी

इन – मालिन, कुम्हारिन, जोगिन, बाघिन, सुनारिन, तेलिन, पड़ोसिन, जुलाहिन

आइन – पंडिताइन, ठकुराइन, मुंशियाइन, ललाइन (लाला)

ता

नोट–स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय में 'ता' को 'त्री' में बदलकर नए शब्दों की रचना की जाती है।

विक्रेता – विक्रेत्री   कवि – कवयित्री
नेता – नेत्री   क्रेता – क्रेत्री
वक्ता – वक्त्री   स्रष्टा – स्रष्ट्री
अभिनेता – अभिनेत्री   द्रष्टा – द्रष्ट्री
श्रोता – श्रोत्री

इका

स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय बनाने के लिए 'अक' प्रत्यय को 'इका' में बदला जाता है।

जैसे

शिक्षक – शिक्षिका
नायक – नायिका
अध्यापक – अध्यापिका
धावक – धाविका
गायक – गायिका

नोट – तद्धित प्रत्यय का एक अन्य रूप/भेद अपत्यवाचक भी माना जाता है।

अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय के योग से बना हुआ कोई शब्द यदि मूल शब्द से उत्पन्न होने का अर्थ (संतान बोधक अर्थ) प्रकट करता है, तो वहाँ वह अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय माना जाता है।

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द	अर्थयुक्त
रघु	अ	राघव	रघु की संतान (पुल्लिंग)
कुरू	अ	कौरव	कुरू की संतान (पुल्लिंग)
दनु	अ	दानव	दनु की संतान (पुल्लिंग)
पांडु	अ	पाण्डव	पांडु की संतान (पुल्लिंग)
मनु	अ	मानव	मनु की संतान (पुल्लिंग)
मनु	ई	मानवी	मनु की संतान (स्त्रीलिंग)
दनु	ई	दानवी	दनु की संतान (स्त्रीलिंग)
यदु	अ	यादव	यदु की संतान (स्त्रीलिंग)
सूर	अ	सौर	यदु की संतान (स्त्रीलिंग)
सिंधु	अ	सैधव	सिंधु की संतान
विष्णु	अ	वैष्णव	विष्णु से उत्पन्न
पुत्र	अ	पौत्र	पुत्र से उत्पन्न
शिव	अ	शैव	शिव से उत्पन्न
वासुदेव	अ	वासुदेव	वसुदेव से उत्पन्न
शक्ति	अ	शाक्त	शक्ति से उत्पन्न
दिति	य	दैत्य	दिति से उत्पन्न
अदिति	य	आदित्य	अदिति से उत्पन्न
कुन्ती	एय	कौन्तेय	कुन्ती से उत्पन्न
गंगा	एय	गांगेय	गंगा से उत्पन्न
मृकण्डा	एय	मार्कण्डेय	मृकण्डा से उत्पन्न
वृष्णि	एय	वार्ष्णेय	वृष्णि से उत्पन्न
द्रुपद	ई	द्रौपदी	द्रुपद से उत्पन्न
मिथिला	ई	मैथिली	मिथिला से उत्पन्न
गंधार	ई	गांधारी	गंधार में उत्पन्न
जनक	ई	जानकी	जनक से उत्पन्न
वल्मीक	इ	वाल्मीकि	वल्मीक से उत्पन्न
मरूत	इ	मारूति	मरूत से उत्पन्न
दशरथ	इ	दाशरथि	दशरथ से उत्पन्न
मनः	ज	मनोज	मन से/में उत्पन्न

प्रत्यय से संबंधित महत्वपूर्ण अन्य नियम

'य' प्रत्यय–पहचान

यदि किसी वाक्य के अन्त में 'य' लिखा हुआ हो एवं उस 'य' से ठीक पहले कोई आधा अक्षर भी लिखा हुआ हो तो वहाँ सदैव 'य' प्रत्यय मानना चाहिए। यहाँ इस प्रत्यय के सभी नियम काम करते हैं।

जैसे

साहित्य – सहित + य
धैर्य – धीर + य
मान्य – मन + य
सौजन्य – सुजन + स
काठिन्य – कठिन + य

दैत्य	–	दिति	+	य
माहात्म्य	–	महात्मा	+	य
औपन्य	–	अपना	+	य
सामान्य	–	समान	+	य
आदित्य	–	अदिति	+	य
दारिद्रय	–	दरिद्र	+	य
कौटिल्य	–	कुटिल	+	य
वात्सल्य	–	वत्सल	+	य
औचित्य	–	उचित	+	य
ऐश्वर्य	–	ईश्वर	+	य
चाणक्य	–	चणक	+	य
दैन्य	–	दीन	+	य
औदार्य	–	उदार	+	य
सौंदर्य	–	सुंदर	+	य
ऐक्य	–	एक	+	य
शौर्य	–	शूर	+	य
शैथिल्य	–	शिथिल	+	य
स्वास्थ्य	–	स्वस्थ	+	य
सामीप्य	–	समीप	+	य
स्वातंत्र्य	–	स्वतंत्र	+	य

ईय/एय प्रत्यय की पहचान

यदि किसी शब्द के अन्त में 'य' लिखा हो परन्तु उनके ठीक पहले आधा अक्षर नहीं हो तो वहाँ 'य' से पहले लिखे हुए स्वर को शामिल करते हुए प्रत्यय मानना चाहिए।

जैसे

आंजनेय	–	अंजनि	+	एय
नाटकीय	–	नाटक	+	ईय
कौन्तेय	–	कुन्ती	+	एय
गांगेय	–	गंगा	+	एय
राधेय	–	राधा	+	एय
आत्रेय	–	अत्रि	+	एय
भारतीय	–	भारत	+	ईय
राष्ट्रीय	–	राष्ट्र	+	ईय
भवदीय	–	भवत्	+	ईय
मानवीय	–	मानव	+	ईय

ध्यान दें – हमने उपर पढ़ा कि 'य' ये पहले आधा अक्षर नहीं आने पर 'य' से पहले लिखे स्वर के अनुसार प्रत्यय का निर्धारण करते हैं।

जैसे – आंजनेय शब्द में 'य' से पहले 'ए' स्वर का आगमन हुआ है अतः 'य' के साथ ए स्वर पहले लगेगा व अंजनि शब्द में 'एय' प्रत्यय उत्तर के रूप में प्राप्त होगा।

तव्य व अनीय प्रत्यय की पहचान

यदि किसी शब्द के अन्त में तव्य/टव्य लिखा हो तो वहाँ 'व्य' प्रत्यय न मानकर तव्य प्रत्यय होगा व शब्द के अन्त में नीय/णीय लिखा हो तो वहाँ अनीय प्रत्यय मानना चाहिए।

जैसे –

द्रष्टव्य	–	दृष	+	तव्य
भवितव्य	–	भावी	+	तव्य
वक्तव्य	–	वच्	+	तव्य
गन्तव्य	–	गम्	+	तव्य
ध्यातव्य	–	ध्या	+	तव्य

अ प्रत्यय की पहचान

इस प्रकार के शब्दों में 'इक' प्रत्यय के सभी नियम काम करते हैं तथा अन्तिम **उ** के स्थान पर **व** हो जाता है फिर अ प्रत्यय जोड़ते है।

जैसे –

मानव	–	मनु	+	अ
कौरव	–	कुरू	+	अ
राघव	–	रघु	+	अ
गौरव	–	गुरु	+	अ
यादव	–	यदु	+	अ
लाघव	–	लघु	+	अ
पाण्डव	–	पंडु	+	अ
माधव	–	मधु	+	ब
दानव	–	दनु	+	अ

अपवाद

कौशल	–	कुशल	+	अ
पौरूष	–	पुरुष	+	अ

उर्दू के प्रत्यय

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन में रहने के कारण हिंदी भाषा के प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगा है।

प्रत्यय	उदाहरण
इन्दा	परिंदा, बाशिंदा, शर्मिंदा
गी	सादगी, बानगी, ताजगी
गर	बाजीगर, कारीगर, सौदागर
दार	हवलदार, किरायेदार, जमींदार
बंद	नजरबंद, कमरबंद, दस्तबंद
ची	अफीमची, नकलची, तोपची
दान	खानदान, पीकदान, कूड़ादान
खोर	आदमखोर, चुगलखोर, रिश्वतखोर

कार	सलाहकार, जानकार, लेखाकार
गार	मददगार, चुगलखोर, रिश्वतखोर
ईन	रंगीन, शौकीन, नमकीन
नामा	सुलहनामा, बाबरनामा, जहाँगीरनामा
इयत	इंसानियत, आदमियत, खैरियत
बाज	चालबाज, धोखेबाज, नशेबाज
आना	दोस्ताना, सालाना, नजराना
मंद	जरूरतमंद, अक्लमंद, अहसानमंद
आबाद	औरंगाबाद, मोजगाबाद, सिकन्दराबाद
गीर	जहाँगीर, राहगीर, आलमगीर
गाह	ईदगाह, दरगाह, ख्वाबगाह
इश	ख्वाहिश, साजिश, फरमाइश

कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रत्यय

आ — आटा, घेरा, छापा, गुजारा
आई — गढाई, चराई, पढाई, रूलाई, लिखाई, लडाई
आन — उठान, पिसान, मिलान, लगान, मकान, खदान
आप — मिलाप, कलाप, अलाप, प्रलाप, विलाप
आव — उतराव, घुमाव, चलाव, चुनाव, बनाव
आस — निकास, हुलास, विकास, गिलास, विलास, प्यास
इया — बढिया, घटिया, मइया, भुइया, गइया, भइया
ई — चढाई, लडाई, बडाई, पढाई, लिखाई, हंसी,
औनी — कमौनी, लिखौनी, उठौनी, नचौनी, गवौनी
त — खपत, बचत, लागत, जपत, बनत, बिगडत, हंसत
ती — चढती, बढती, घटती, रटती, पटती, श्रीमती
न्ती — चढन्ती, बढन्ती, घटन्ती, उठन्ती, गिरन्ती,
न — उद्घाटन, पुरान, देन, मारन, मोहन, लगन, लेनदेन
नी — कटनी, मरनी, भरनी, लडनी, अनी, ठनी
र — ठोकर, जोकर, मकर, बेर, केर, नीर, क्षीर
वट — तरावट, लिखावट, सजावट, बनावट, केवट
हट — आहट, चिल्लाहट, घबराहट, बुलबुलाहट
अंकू — उंकू, अडंकू, पढाकू
अक — लेखक, पाठक, वाचक, नायक, सम्प्रदायक, सार्थक, दीपक, वाचक
अक्कड — पियक्कड, बुझक्कड, भुलक्कड, कुदक्कड
आ — चढा, रखा, कटा, भूंजा, फोडा, चला
आक — पैराक, तैराक, तडाक, उडाक
आकू — लडाकू, उडाकू, पढाकू, कूदाकू, हलाकू
इयल — अडियल, सडियल, मरियल, बढियल, दढियल
इया — जडिया, लखिया, धुनिया, नियरिया, दुनिया
ऊ — खाऊ, रट्टू, उतारू, चालू, बिगाडू, मारू, काटू
एरा — कमेरा, लुटेरा, झलेरा, पखेरा, हिलेरा
एया — कटैया, बचैया, परोसैया, भरैया
ऐत — लठैत, लडैत, चढैत, फिकैत
औडा — भगोडा, हँसोडा, मरोडा
वैया — खवैया, गवैया, देवैया, लेवैया
सार — मिलनसार, हिलनसार
हार — सेवनहार, खेवनहार, तारणहार, देवनहार
हारा — सेवनहारा, खेवनहारा, तारणहारा, देवनहारा
ना — खाना, गाना, बोलना, रोना, पीना, सोना, आना, लेना, देना
नी — चटनी, सूँघनी, कहनी, छननी, ओढनी, घोटनी, पढनी, सुननी
आ — झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, घेरा
ई — रेती, फाँसी, गाँसी, चिमटी
ऊ — झाडू, माडू, काढू, साढू
न — झाडन, बेलन, जामन
ना — बेलना, कसना, ओढना, घोटना, रेतना, दलना
आवना — सुहावना, लुभावना, डरावना, हंसावना, रूलावना, गिरावना
ना — उडना, हँसना, सुहाना, रोना, लदना
नी — कहानी, सुननी, हँसनी, ओढनी, पहननी, जननी
वाँ — ढलवाँ, कटवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ
क — बैठक, फाटक
ना — झिरना, रमना, पालना
आनी — कमानी, लुभानी, मिलानी
औना — खिलौना, बिछौना, उढौना
औनी — पहरौनी, ठहरौनी, मिथौनी, गवौनी, बुलौनी
आवनी — छावनी, उठावनी, गिरावनी, बुलावनी, लुभावनी, मिलावनी, डोलवानी

इन	–	कमाइन, गन्धाइन, लियोइन, दियाइन
का	–	छिलका, किलका, चिलका
की	–	फिरकी, फुटकी, डुचकी, लुटकी
आ	–	जोडा, युवा, सर्राफा, बजाजा, बोझा
आइँद	–	कपडाइँद, सडाइँद, घिनोइँद, मघाइँद
आई	–	भलाई, बुराई, ढिठाई, चतुराई, पण्डिताई
आन	–	घमासान, ऊँचाई, निचान, लम्बान, चौडान, उडान
आयत	–	बहुतायत, पंचायत, तिहायत, अपनायत
आवट	–	अमावट, महावट, गिरावट
आस	–	मिठास, खटास, निन्दास
आहट	–	कडवाहट, चिकनाहट, गरमाहट, चिल्लाहट
औती	–	बपौती, बुढौती, छिनौती
त	–	चाहत, रंगत, मिल्लत
ती	–	कमती, बढती, घटती, चढती
पन	–	कालापन, लडकपन, बालपन, पागलपन
पा	–	बुढापा, रंडापा, बहिनापा, मोटापा
स	–	आपस, धमस, तमस, रजस
इया	–	आढतिया, मखनिया, बखेडिया, मुखिया, रसोइया
एडी	–	भँगोडी, गँजेडी, नषेडी
एली	–	हथेली, भेली, तबेली
आऊ	–	अगाऊ, धराऊ, बटाऊ, पण्डिताऊ
ऐल	–	खपरैल, दुधैल, दन्तैल, तोन्दैल
ला	–	अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाडला
वन्त	–	गुणवन्त, धनवन्त, दयावन्त, षीलवन्त
हरा	–	सुनहरा, रूपहरा
हा	–	हलवाहा, पनिहा, कविराहा
आ	–	झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, झोरा, घेरा
इया	–	खटिया, फुडिया, डबिया, गठरिया, बिटिया
ई	–	पहाडी, घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी, रस्सी
की	–	कनकी, टिमकी
टा	–	रोगटा, कलूटा
टी	–	चोटी, बहूटी
डा	–	चमडा, बछडा, दुःखडा, सुखडा, टुकडा, लँगडा
डी	–	टँगडी, पलँगडी, पँखडी, लालडी
री	–	कोठरी, छतरी, बांसुरी, मोटरी, गठरी, कुमारी
ली	–	टिकली
वा	–	बछवा, बचवा, पुरवा
सा	–	लालसा, अच्छासा, उडतासा, एकासा, मरासा
आना	–	राजपुताना, हिन्दुआना, तेलंगाना, उडियाना
इया	–	मथुरिया, कलकतिया, सरवरिया, कनौजिया
डी	–	अगाडी, पिछाडी
आर	–	दुधार, गँवार
इक	–	कार्मिक, धार्मिक, तार्किक, कारूणिक,
ई	–	आरी, ऊनी, देषी
उआ	–	मछुआ, गरूआ, खारूआ, फगुआ, टहलुआ
ऊ	–	ढालू, घरू, बाजारू, फेटू, गरजू, झाँसू
आई	–	वाकई, खनाई, जोताई, रेताई, जिताई
आर	–	बिलार, छीनार, दुत्कार, सत्कार, व्यवहार
आरी	–	दुधारी, दुवारी, बिलारी, किनारी
इय	–	कमनीय, गमनीय, दमनीय
एरा	–	घनेरा, कमेरा, जनेरा
एल	–	फुलेल, नकेल, अकेल
एला	–	अकेला, दुकेला, बघेला, मुरेला, अधेला, पेला, ठेला, मेला, रेला
ता	–	पाँयता, रायता
नी	–	चाँदनी, पैजनी, नथनी
वान	–	भाग्यवान्, मूल्यवान, गुणवान
वाला	–	रखवाला, बलवाला, दिलवाला, रंगवाला, घरवाला, ग्वाला, गानेवाला
ल	–	घायल, पायल, छागल, पागल
हट	–	आहट, बुलाहट, बौखलाहट

Unleash the topper in you